



PANSHUL

03 Mar 2013

01:10 AM

Fatehabad

Model: Web-MyKundli

Order No: 120949801

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 2-03/03/2013
दिन _____: शनि-रविवार
जन्म समय _____: 01:10:00 घंटे
इष्ट _____: 45:42:15 घटी
स्थान _____: Fatehabad
राज्य _____: Haryana
देश _____: India

अक्षांश _____: 29:31:00 उत्तर
रेखांश _____: 75:27:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:28:12 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 00:41:48 घंटे
वेलान्तर _____: -00:12:08 घंटे
साम्पातिक काल _____: 11:24:49 घंटे
सूर्योदय _____: 06:53:06 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:28:00 घंटे
दिनमान _____: 11:34:54 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: वसन्त
सूर्य के अंश _____: 18:20:31 कुम्भ
लग्न के अंश _____: 15:39:44 वृश्चिक

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: वृश्चिक - मंगल
राशि-स्वामी _____: तुला - शुक्र
नक्षत्र-चरण _____: विशाखा - 1
नक्षत्र स्वामी _____: गुरु
योग _____: ध्रुव
करण _____: गर
गण _____: राक्षस
योनि _____: व्याघ्र
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: शूद्र
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: सर्प
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: वायु
जन्म नामाक्षर _____: ती-तीरथ
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मीन

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1934	फाल्गुन	12
पंजाबी	संवत : 2069	फाल्गुन	20
बंगाली	सन् : 1419	फाल्गुन	19
तमिल	संवत : 2069	मासी	19
केरल	कोल्लम : 1188	कुंभम	19
नेपाली	संवत : 2069	फाल्गुन	20
चैत्रादि	संवत : 2069	फाल्गुन	कृष्ण 6
कार्तिकादि	संवत : 2069	माघ	कृष्ण 6

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 5
तिथि समाप्ति काल _____ : 20:05:18
जन्म तिथि _____ : 6
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : स्वाति
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 23:18:31 घंटे
जन्म योग _____ : विशाखा
सूर्योदय कालीन योग _____ : ध्रुव
योग समाप्ति काल _____ : 26:05:40 घंटे
जन्म योग _____ : ध्रुव
सूर्योदय कालीन करण _____ : कौलव
करण समाप्ति काल _____ : 08:56:03 घंटे
जन्म करण _____ : गर
भयात _____ : 04:38:42
भभोग _____ : 57:12:17
भोग्य दशा काल _____ : गुरु 14 वर्ष 8 मा 13 दि

घात चक्र

मास _____ : माघ
तिथि _____ : 4-9-14
दिन _____ : गुरुवार
नक्षत्र _____ : शतभिषा
योग _____ : शुक्ल
करण _____ : तैत्तिल
प्रहर _____ : 4
वर्ग _____ : गरुड़
लग्न _____ : कन्या
सूर्य _____ : कन्या
चन्द्र _____ : धनु
मंगल _____ : तुला
बुध _____ : कर्क
गुरु _____ : वृश्चिक
शुक्र _____ : धनु
शनि _____ : सिंह
राहु _____ : मकर

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

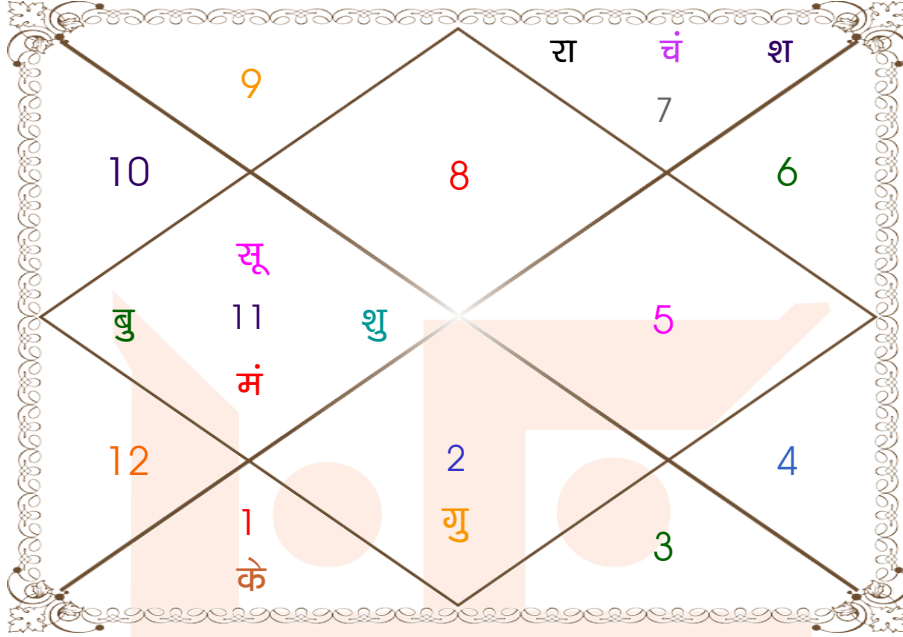
लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

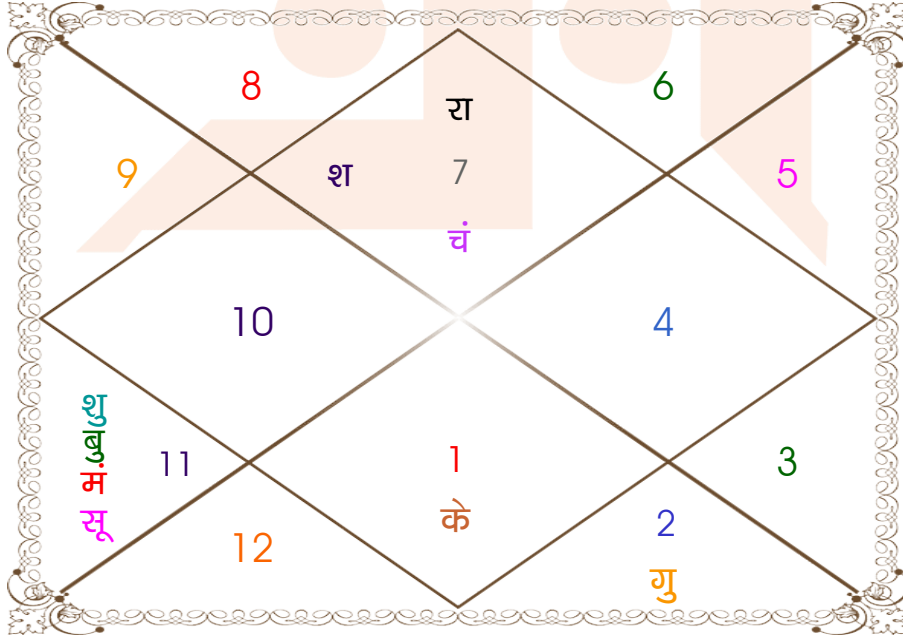
9835195382

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

	के	गु	
बु म शु			
	ल	रा चं श	

लग्न कुंडली

गु	के	
		सु म शु
	श चं रा	ल

विंशोत्तरी
गुरु 14वर्ष 8मा 13दि
गुरु

03/03/2013

16/11/2131

गुरु	15/11/2027
शनि	15/11/2046
बुध	15/11/2063
केतु	15/11/2070
शुक्र	15/11/2090
सूर्य	14/11/2096
चन्द्र	16/11/2106
मंगल	16/11/2113
राहु	16/11/2131

योगिनी
धान्या 2वर्ष 9मा 2दि
उल्का

04/12/2024

04/12/2030

उल्का	04/12/2025
सिद्धा	03/02/2027
संकटा	04/06/2028
मंगला	04/08/2028
पिंगला	04/12/2028
धान्या	04/06/2029
भ्रामरी	03/02/2030
भद्रिका	04/12/2030

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

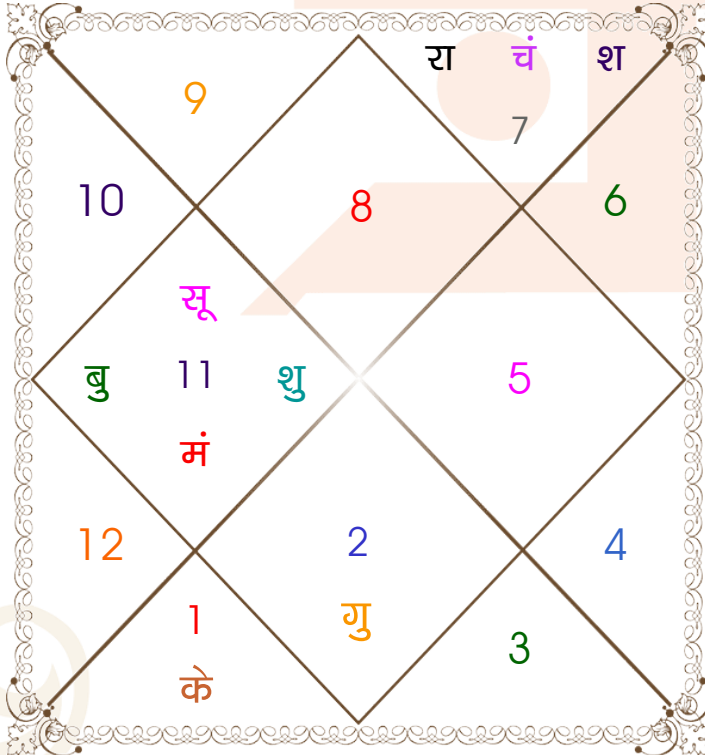
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृश्चि	15:39:44	309:37:12	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	गुरु	---
सूर्य			कुंभ	18:20:31	01:00:10	शतभिषा	4	24	शनि	राहु	चंद्र	शत्रु राशि
चंद्र			तुला	21:04:47	13:57:08	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	गुरु	सम राशि
मंगल	अ		कुंभ	28:34:58	00:46:57	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	शुक्र	सम राशि
बुध	व	अ	कुंभ	21:47:03	00:57:27	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	शनि	सम राशि
गुरु			वृष	13:53:15	00:05:55	रोहिणी	2	4	शुक्र	चंद्र	राहु	शत्रु राशि
शुक्र	अ		कुंभ	11:52:09	01:14:56	शतभिषा	2	24	शनि	राहु	शनि	मित्र राशि
शनि	व		तुला	17:21:19	00:01:14	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	शुक्र	उच्च राशि
राहु	व		तुला	25:02:56	00:00:23	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	बुध	मित्र राशि
केतु	व		मेष	25:02:56	00:00:23	भरणी	4	2	मंगल	शुक्र	बुध	मित्र राशि
हर्ष			मीन	12:58:49	00:03:11	उ०भाद्रपद	3	26	गुरु	शनि	राहु	---
नेप			कुंभ	09:08:27	00:02:15	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	गुरु	---
प्लूटो			धनु	17:06:44	00:01:14	पूर्वाषाढा	2	20	गुरु	शुक्र	चंद्र	---
दशम भाव			सिंह	26:23:15	--	पू०फाल्गुनी	--	11	सूर्य	शुक्र	केतु	--

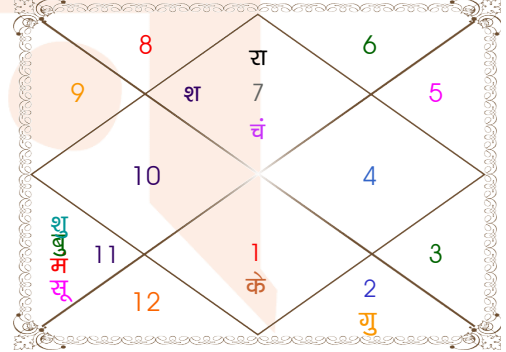
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:02:42

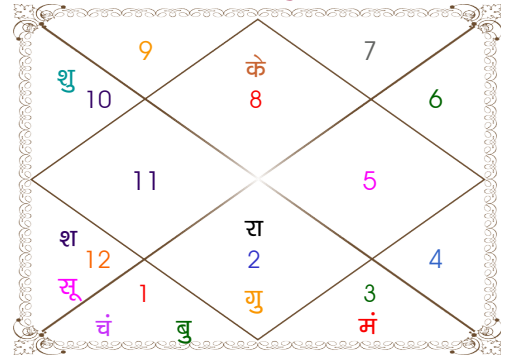
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	वृश्चिक 02:26:59	वृश्चिक 15:39:44
2	धनु 02:26:59	धनु 19:14:14
3	मकर 06:01:30	मकर 22:48:45
4	कुम्भ 09:36:00	कुम्भ 26:23:15
5	मीन 09:36:00	मीन 22:48:45
6	मेष 06:01:30	मेष 19:14:14
7	वृष 02:26:59	वृष 15:39:44
8	मिथुन 02:26:59	मिथुन 19:14:14
9	कर्क 06:01:30	कर्क 22:48:45
10	सिंह 09:36:00	सिंह 26:23:15
11	कन्या 09:36:00	कन्या 22:48:45
12	तुला 06:01:30	तुला 19:14:14

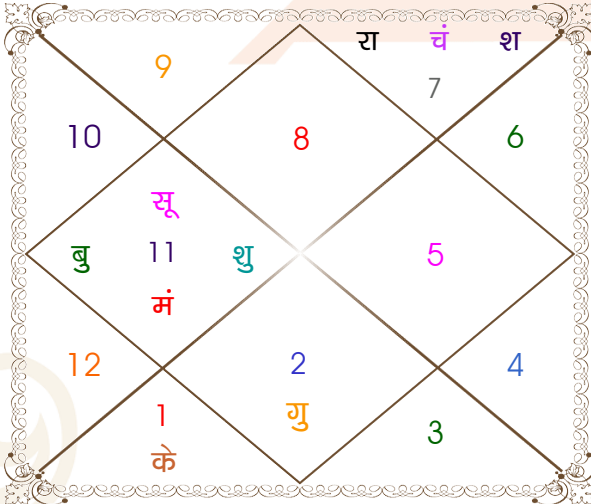
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृश्चिक	15:39:44
2	धनु	16:56:24
3	मकर	21:33:18
4	कुम्भ	26:23:15
5	मीन	27:12:05
6	मेष	23:00:51
7	वृष	15:39:44
8	मिथुन	16:56:24
9	कर्क	21:33:18
10	सिंह	26:23:15
11	कन्या	27:12:05
12	तुला	23:00:51

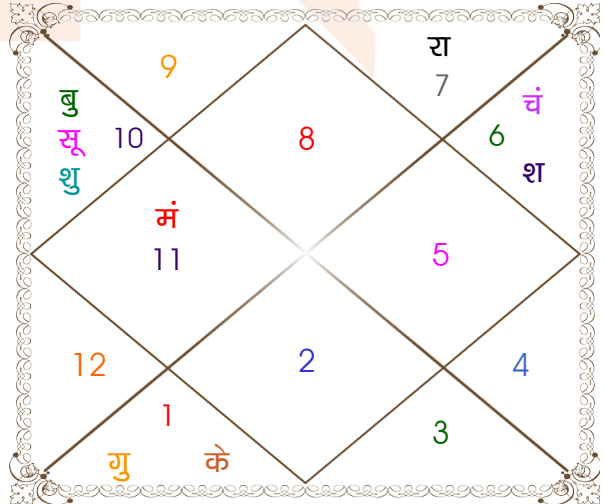
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
पूर्वाभाद्रपद	उभाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उभाफाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति

चलित कुंडली



भाव कुंडली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 14 वर्ष 8 मास 13 दिन

गुरु 16 वर्ष 03/03/2013 15/11/2027	शनि 19 वर्ष 15/11/2027 15/11/2046	बुध 17 वर्ष 15/11/2046 15/11/2063	केतु 7 वर्ष 15/11/2063 15/11/2070	शुक्र 20 वर्ष 15/11/2070 15/11/2090
गुरु 02/01/2014	शनि 18/11/2030	बुध 13/04/2049	केतु 12/04/2064	शुक्र 16/03/2074
शनि 16/07/2016	बुध 28/07/2033	केतु 10/04/2050	शुक्र 13/06/2065	सूर्य 17/03/2075
बुध 22/10/2018	केतु 06/09/2034	शुक्र 08/02/2053	सूर्य 18/10/2065	चंद्र 14/11/2076
केतु 28/09/2019	शुक्र 06/11/2037	सूर्य 15/12/2053	चंद्र 19/05/2066	मंगल 15/01/2078
शुक्र 29/05/2022	सूर्य 19/10/2038	चंद्र 17/05/2055	मंगल 16/10/2066	राहु 14/01/2081
सूर्य 17/03/2023	चंद्र 19/05/2040	मंगल 13/05/2056	राहु 03/11/2067	गुरु 15/09/2083
चंद्र 16/07/2024	मंगल 28/06/2041	राहु 30/11/2058	गुरु 09/10/2068	शनि 15/11/2086
मंगल 22/06/2025	राहु 04/05/2044	गुरु 07/03/2061	शनि 18/11/2069	बुध 15/09/2089
राहु 15/11/2027	गुरु 15/11/2046	शनि 15/11/2063	बुध 15/11/2070	केतु 15/11/2090

सूर्य 6 वर्ष 15/11/2090 14/11/2096	चंद्र 10 वर्ष 14/11/2096 16/11/2106	मंगल 7 वर्ष 16/11/2106 16/11/2113	राहु 18 वर्ष 16/11/2113 16/11/2131	गुरु 16 वर्ष 16/11/2131 00/00/0000
सूर्य 05/03/2091	चंद्र 15/09/2097	मंगल 14/04/2107	राहु 29/07/2116	गुरु 04/03/2133
चंद्र 03/09/2091	मंगल 16/04/2098	राहु 02/05/2108	गुरु 23/12/2118	00/00/0000
मंगल 09/01/2092	राहु 16/10/2099	गुरु 08/04/2109	शनि 28/10/2121	00/00/0000
राहु 03/12/2092	गुरु 15/02/2101	शनि 17/05/2110	बुध 17/05/2124	00/00/0000
गुरु 21/09/2093	शनि 16/09/2102	बुध 15/05/2111	केतु 04/06/2125	00/00/0000
शनि 03/09/2094	बुध 16/02/2104	केतु 11/10/2111	शुक्र 04/06/2128	00/00/0000
बुध 10/07/2095	केतु 16/09/2104	शुक्र 10/12/2112	सूर्य 29/04/2129	00/00/0000
केतु 15/11/2095	शुक्र 17/05/2106	सूर्य 17/04/2113	चंद्र 29/10/2130	00/00/0000
शुक्र 14/11/2096	सूर्य 16/11/2106	चंद्र 16/11/2113	मंगल 16/11/2131	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल गुरु 14 वर्ष 8 मा 12 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - राहु 22/06/2025 15/11/2027	शनि - शनि 15/11/2027 18/11/2030	शनि - बुध 18/11/2030 28/07/2033	शनि - केतु 28/07/2033 06/09/2034	शनि - शुक्र 06/09/2034 06/11/2037
राहु 31/10/2025 गुरु 25/02/2026 शनि 14/07/2026 बुध 15/11/2026 केतु 05/01/2027 शुक्र 31/05/2027 सूर्य 14/07/2027 चंद्र 25/09/2027 मंगल 15/11/2027	शनि 07/05/2028 बुध 10/10/2028 केतु 13/12/2028 शुक्र 14/06/2029 सूर्य 08/08/2029 चंद्र 08/11/2029 मंगल 11/01/2030 राहु 25/06/2030 गुरु 18/11/2030	बुध 06/04/2031 केतु 03/06/2031 शुक्र 14/11/2031 सूर्य 02/01/2032 चंद्र 24/03/2032 मंगल 20/05/2032 राहु 14/10/2032 गुरु 23/02/2033 शनि 28/07/2033	केतु 21/08/2033 शुक्र 27/10/2033 सूर्य 16/11/2033 चंद्र 20/12/2033 मंगल 13/01/2034 राहु 15/03/2034 गुरु 08/05/2034 शनि 11/07/2034 बुध 06/09/2034	शुक्र 18/03/2035 सूर्य 15/05/2035 चंद्र 19/08/2035 मंगल 25/10/2035 राहु 16/04/2036 गुरु 17/09/2036 शनि 19/03/2037 बुध 30/08/2037 केतु 06/11/2037
शनि - सूर्य 06/11/2037 19/10/2038	शनि - चंद्र 19/10/2038 19/05/2040	शनि - मंगल 19/05/2040 28/06/2041	शनि - राहु 28/06/2041 04/05/2044	शनि - गुरु 04/05/2044 15/11/2046
सूर्य 23/11/2037 चंद्र 22/12/2037 मंगल 11/01/2038 राहु 04/03/2038 गुरु 19/04/2038 शनि 13/06/2038 बुध 02/08/2038 केतु 22/08/2038 शुक्र 19/10/2038	चंद्र 06/12/2038 मंगल 09/01/2039 राहु 05/04/2039 गुरु 21/06/2039 शनि 21/09/2039 बुध 12/12/2039 केतु 15/01/2040 शुक्र 20/04/2040 सूर्य 19/05/2040	मंगल 12/06/2040 राहु 11/08/2040 गुरु 04/10/2040 शनि 07/12/2040 बुध 03/02/2041 केतु 26/02/2041 शुक्र 05/05/2041 सूर्य 25/05/2041 चंद्र 28/06/2041	राहु 01/12/2041 गुरु 19/04/2042 शनि 30/09/2042 बुध 25/02/2043 केतु 27/04/2043 शुक्र 17/10/2043 सूर्य 08/12/2043 चंद्र 04/03/2044 मंगल 04/05/2044	गुरु 04/09/2044 शनि 29/01/2045 बुध 09/06/2045 केतु 02/08/2045 शुक्र 03/01/2046 सूर्य 18/02/2046 चंद्र 06/05/2046 मंगल 29/06/2046 राहु 15/11/2046
बुध - बुध 15/11/2046 13/04/2049	बुध - केतु 13/04/2049 10/04/2050	बुध - शुक्र 10/04/2050 08/02/2053	बुध - सूर्य 08/02/2053 15/12/2053	बुध - चंद्र 15/12/2053 17/05/2055
बुध 20/03/2047 केतु 10/05/2047 शुक्र 04/10/2047 सूर्य 17/11/2047 चंद्र 29/01/2048 मंगल 20/03/2048 राहु 30/07/2048 गुरु 24/11/2048 शनि 13/04/2049	केतु 04/05/2049 शुक्र 03/07/2049 सूर्य 21/07/2049 चंद्र 20/08/2049 मंगल 11/09/2049 राहु 04/11/2049 गुरु 22/12/2049 शनि 18/02/2050 बुध 10/04/2050	शुक्र 29/09/2050 सूर्य 20/11/2050 चंद्र 14/02/2051 मंगल 16/04/2051 राहु 18/09/2051 गुरु 03/02/2052 शनि 16/07/2052 बुध 09/12/2052 केतु 08/02/2053	सूर्य 23/02/2053 चंद्र 21/03/2053 मंगल 08/04/2053 राहु 25/05/2053 गुरु 05/07/2053 शनि 23/08/2053 बुध 06/10/2053 केतु 24/10/2053 शुक्र 15/12/2053	चंद्र 27/01/2054 मंगल 26/02/2054 राहु 15/05/2054 गुरु 23/07/2054 शनि 13/10/2054 बुध 25/12/2054 केतु 25/01/2055 शुक्र 21/04/2055 सूर्य 17/05/2055

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	3
भाग्यांक	3
मित्र अंक	3, 5, 7, 9
शत्रु अंक	1, 4, 8
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	रवि, सोम, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, चन्द्र, मंगल
मित्र राशि	मकर, मिथुन
मित्र लग्न	कुम्भ, कर्क, कन्या
अनुकूल देवता	लक्ष्मी
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	मोती
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

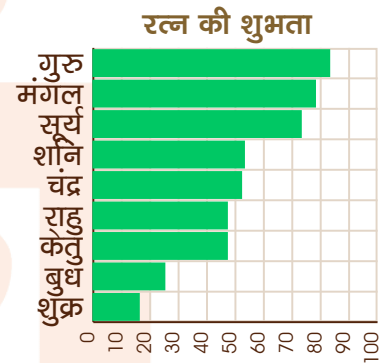
9835195382

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	83%	दम्पति, धन, सन्तति सुख
मूंगा	मंगल	78%	सुख, शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
माणिक्य	सूर्य	73%	सुख, व्यावसायिक उन्नति
नीलम	शनि	53%	कम खर्च, पराक्रम, सुख
मोती	चंद्र	52%	कम खर्च, भाग्योदय
गोमेद	राहु	47%	व्यय, ग्रह कलेश
लहसुनिया	केतु	47%	शत्रु व रोग, ग्रह कलेश
पन्ना	बुध	25%	ग्रह कलेश, दुर्घटना, हानि
हीरा	शुक्र	16%	ग्रह कलेश, दाम्पत्य कष्ट, व्यय



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
गुरु	15/11/2027	80%	58%	84%	0%	95%	0%	53%	47%	47%
शनि	15/11/2046	61%	28%	66%	38%	83%	28%	66%	55%	22%
बुध	15/11/2063	80%	28%	78%	50%	83%	28%	53%	47%	47%
केतु	15/11/2070	61%	28%	84%	25%	83%	28%	31%	22%	61%
शुक्र	15/11/2090	61%	28%	78%	38%	83%	41%	59%	55%	55%
सूर्य	14/11/2096	86%	58%	84%	25%	89%	0%	31%	22%	22%
चंद्र	16/11/2106	80%	64%	78%	38%	83%	16%	53%	22%	22%
मंगल	16/11/2113	80%	58%	91%	0%	89%	16%	53%	22%	55%
राहु	16/11/2131	61%	28%	66%	25%	83%	28%	59%	61%	22%

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	03/03/2013-02/11/2014	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/01/2020-29/04/2022 12/07/2022-17/01/2023	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041	

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044	
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076	
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/01/2079-12/04/2081 03/08/2081-07/01/2082	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	18/07/2088-31/10/2088 05/04/2089-19/09/2090 25/10/2090-21/05/2091	
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/10/2097-02/05/2098 20/06/2098-26/12/2099 17/03/2100-16/09/2100	

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया

फल

सम
अशुभ
शुभ
शुभ
शुभ

क्षेत्र

कम खर्च
बुरा स्वास्थ्य
पराक्रम
दम्पति
धनार्जन

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति चतुर्थ भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। इसके प्रभाव से जीवन में आपको भौतिक सुख संसाधनों तथा अन्य जायदाद आदि की प्राप्ति परिश्रम से होगी। शारीरिक रूप से आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भाव उत्पन्न हो सकता है लेकिन दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब हो सकता है तथा वैवाहिक वार्ताओं में भी व्यवधान आ सकते हैं लेकिन अंततोगत्वा इसमें सफलता अवश्य प्राप्त होगी। आपकी पत्नी का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा आपसी संबंधों में कुछेक क्षणों को छोड़कर मधुरता बनी रहेगी।

चतुर्थ भाव में मंगल की स्थिति के फलस्वरूप आपको सांसारिक सुख संसाधन परिश्रम पूर्वक प्राप्त होंगे साथ ही सप्तम भाव पर दृष्टि के प्रभाव से पत्नी के स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा आप दाम्पत्य जीवन का सुख पूर्वक उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि के फलस्वरूप आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही उच्च पद तथा सामाजिक मान सम्मान प्राप्त करेंगे। एकादश भाव पर दृष्टि के प्रभाव से आपके आय साधनों में सामान्यतया वृद्धि होगी। यदा कदा न्यूनता का भाव भी रहेगा लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं रहेगा तथा आपका सामान्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

मंगल के शुभ फलों में अधिक अनुकूलता के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए। जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो जाए। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इसके भंग होने से आप सर्वत्र सफलता के मार्ग पर

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

अग्रसर होंगे तथा सांसारिक सुख संसाधन ऐश्वर्य तथा वैभव की इच्छित प्राप्ति होगी तथा दाम्पत्य संबंधों में भी मधुरता का भाव विद्यमान रहेगा।



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्ण्यता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4. शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में शेषनाग नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप जातक के जीवन में मनोभिलाषित कार्य प्रायः पूरा नहीं होता है। यदि कार्य सिद्ध भी होता है तो थोड़ा बिलम्ब से होता है। जातक जन्म स्थान व देश से दूर चला जाता है। गुप्त शत्रुओं से जातक थोड़ा बहुत भयाक्रान्त रहता है। वाद-विवाद, लड़ाई-झगड़े में जातक को प्रायः हार का सामना करना पड़ता है तथा न्यायालय से भी थोड़ा बहुत नुकसान पाता है और समय-समय पर बदनामी का भय होता रहता है।

इस योग के कारण जातक का जीवन रहस्यमय रहता है तथा मानसिक उद्विग्नता के कारण दिल और दिमाग प्रायः परेशान रहता है। कोई न कोई रोग व्याधि समय-समय पर परेशान करता रहता है। काम बनते-बनते रह जाते हैं। काम करने का ढंग निराला होता है। आमदनी से विशेष खर्च रहता है। परिणामस्वरूप जातक को आर्थिक विपन्नता लग जाती है। जातक बहुत कर्जदार हो जाते हैं और कर्जा उतारने हेतु किये गए प्रयासों में आंशिक रूप में असफलता मिलती है। जीवन में प्रायः अनेकों बार संघर्ष करना पड़ता है। जातक को शारीरिक सुख का प्रायः अभाव रहता है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है। सामाजिक मान सम्मान भी मिलता है। जीवन के अन्त में या मृत्यु के उपरान्त विशेष रूप से ख्याति (प्रसिद्धि) मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन्, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है ।
- नवम् भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में चन्द्र के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें । दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें । ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें ।

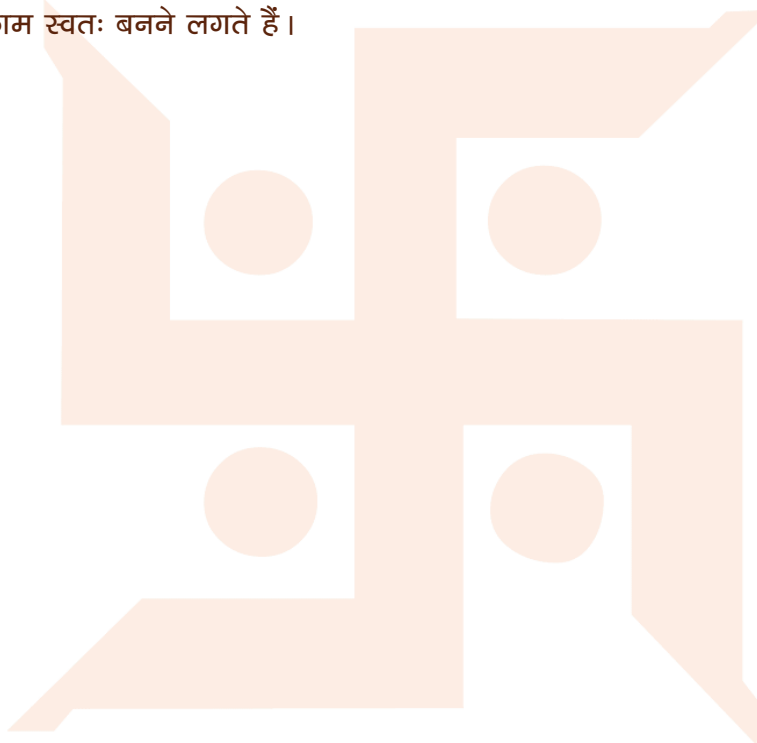
आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को

प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



ग्रह फल

सूर्य

चतुर्थभाव में सूर्य हो तो जातक परमसुन्दर, कठोर, पितृधननाशक, चिन्तास्त, भाईयों से वैर करने वाला, गुप्तविद्या प्रिय एवं वाहन सुखहीन होता है।

कुम्भ राशि में रवि हो तो जातक स्थिरचित्त, स्वार्थी, कार्यदक्ष, कोधी, दुःखी, निर्धन, अच्छा ज्योतिषी एवं मध्य अवस्था के पश्चात् सन्यास लेने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य चतुर्थ भाव में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय होंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपका यत्नपूर्वक सहयोग करते रहेंगे। पिता से आपको धन, वाहन तथा अन्य प्रकार से सम्पत्ति अर्जित करते रहेंगे। इसके साथ ही नौकरी तथा व्यापार में भी आप उनसे सहयोग प्राप्त करते रहेंगे तथा उन्हीं के सहयोग से उन्नति भी करेंगे।

आप के मन में उनके प्रति सम्मान एवं आदर का भाव विद्यमान रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन में भी रुचि रहेगी। आपके परस्पर मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु वह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में आप हमेशा उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगे तथा अवसरानुकूल वांछित सहायता भी प्रदान करेंगे।

चन्द्र

बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक मृदुभाषी, चिन्ताशील, एकात्तप्रिय, कोधी, कफरोगी, चंचल, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।

तुला राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दीर्घदेही, आस्तिक, अन्नदाता, धनवान्, जमींदार, कुशाबुद्धिवाला, चतुर, उच्चाकांक्षाओं से रहित, सन्तोषी एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पड़ेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यों के प्रति प्रवृत्त होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोड़कर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

मंगल

चतुर्थभाव में मंगल हो तो जातक सन्ततिवान्, मातृसुखहीन, वाहनसुख, प्रवासी, अग्निभययुक्त, अल्पमृत्यु चा अपमृत्यु प्राप्त करने वाला, कृषक, बन्धुविरोधी एवं लाभ युक्त होता है।

कुम्भ राशि में मंगल हो तो जातक व्यसनी, लोभी, सटटे से धननाशक, आचारहीन, मत्सरवृत्ति एवं बुद्धिहीन होता है।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का आपको मध्यम सुख प्राप्त होगा। उनका स्वास्थ्य अच्छा होगा परन्तु यदा कदा शरीर से वे अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में भी वे आपको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आजीविका एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको उनका सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

आपके हृदय में भी उनके प्रति स्नेह का भाव विद्यमान रहेगा। आप के आपसी संबंध मधुर रहेंगे। परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने पर इसमें कटुता का भी वातावरण बनेगा लेकिन यह अस्थायी रहेगा। साथ ही सुख दुःख एवं समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में आप उन्हें अपना आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। इस प्रकार मिलजुल कर आप अपनी अधिकांश समस्याओं का समाधान करके प्रसन्नानुभूति प्राप्त करेंगे।

बुध

चतुर्थभाव में बुध हो तो जातक पण्डित भाग्यवान् नीतिवान्, नीतिज्ञ, लेखक, विद्वान्, बन्धुप्रेमी, उदार, गतिप्रिय, आलसी, स्थूलदेही, वाहनसुखी एवं दानी होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

गुरु

सप्तमभाव में गुरु हो तो जातक सुन्दर, धैर्यवान्, भाग्यवान्, प्रवासी, सन्तोषी, स्त्रीप्रेमी, परस्त्रीरत, ज्योतिषी, नम्र, विद्वान् वक्ता एवं प्रधान होता है।

वृष राशि में गुरु हो तो जातक पुष्टशरीर वाला, सदाचारी, धनवान्, आस्तिक, चिकित्सक, विद्वान्, बुद्धिमान्, जीवन में स्थिरता, दृढ़विचार, दिखावा करने वाला एवं कामुक होता है।

शुक्र

चतुर्थ भाव में शुक्र हो तो जातक बलवान्, परोपकारी, सुन्दर, व्यवहार कुशल, विलासी, दीर्घायु, पुत्रवान्, भाग्यवान्, सुखी, दानी, वाहनों का स्वामी एवं आस्तिक होता है।

कुम्भ राशि में शुक्र हो तो जातक शान्तिप्रिय, दूसरों को सहायता करने वाला, सच्चरित्र, सुन्दर, लोकप्रिय, चिन्ताशील एवं रोग से सन्तप्त होता है।

शनि

बारहवें भाव में शनि हो तो जातक आलसी, दुष्ट, व्यसनी, व्यर्थ व्यय करने वाला, अपस्मार, उन्माद का रोगी, मातुलकष्टदायक, अविश्वासी एवं कटुभाषी होता है।

तुला राशि में शनि हो तो जातक राजनीति में रुचि रखने वाला, प्रसिद्धनेता, धनी, सम्मानित शक्तिशाली, दानशील, परस्त्रियों में रुचि, सुभाषी, यशस्वी, स्वाभिमानी एवं उन्नतिशील होता है।

राहु

बारहवें भाव में राहु हो तो जातक विवेकहीन, कामी, चिन्ताशील, अतिव्ययी, सेवक, परिश्रमी, मूर्ख एवं मतिमन्द होता है।

तुला राशि में राहु हो तो जातक अल्पायु, दाँतों के रोग, विरासत में धन पाने वाला एवं कार्य कुशल होता है।

केतु

षष्ठभावे में केतु हो तो जातक वात विकारी, झगड़ालू, अरिष्टनिवारक, सुखी, मितव्ययी, भूत प्रेतजनित रोगों से रोगी, दुर्घटना, दीर्घायु एवं धनी होता है।

मेष राशि में केतु हो तो जातक चंचल, बहुभाषी एवं सुखी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- गुरु
(03/03/2013 - 15/11/2027)

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 03/03/2013 को आरम्भ तथा 15/11/2027 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव जीवन साथी, व्यवसाय, कोर्ट-कचहरी के मामले, विदेश संबंध तथा विदेशों में अर्जित प्रतिष्ठा का द्योतक है। गुरु स्वभाव से एक शुभ ग्रह है जिसकी सप्तम भाव में स्थिति तथा एकादश, प्रथम और तृतीय भाव पर दृष्टि है। इन भावों पर यह शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह वर्षों की इस दशा में आपको बहुत ही आनन्द तथा शान्ति की प्राप्ति होगी और आप उन्नति करेंगे।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी गुरु की सप्तम भाव, जो एक केंद्र है, में स्थिति तथा स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व के द्योतक प्रथम भाव पर इसकी दृष्टि के फलस्वरूप आपको किसी भयानक विपत्ति से छुटकारा मिलेगा तथा इस दशा काल में कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या आपको परेशान नहीं कर पाएगी और आपका जीवन सामान्य रहेगा।

अर्थ सम्पत्ति :

गुरु, जो स्वभावतः एक शुभ ग्रह है तथा जो दशम भाव (कर्म भाव) के स्वामी के अतिरिक्त सप्तम भाव का स्वामी होकर सप्तम भाव में स्थित है एवं सप्तम भाव से जिसकी दृष्टि एकादश भाव (आय भाव) पर है, आपको इस दशा काल में चल एवं अचल संपत्ति में बढोतरी करने का सुअवसर प्रदान करेगा तथा आरामदेह और शौकीन वस्तुओं को खरीदने में आपकी अक्षमता को कम करेगा।

व्यवसाय :

सप्तम अर्थात् जीवनसाथी के भाव तथा दशम अर्थात् कर्म भाव के स्वामी गुरु की सप्तम भाव में स्थिति के कारण आपका व्यवसाय उत्तम होगा। आप व्यवसाय में लाभ प्राप्त करेंगे। आपको विदेश यात्रा का अवसर मिलेगा। आप वाक्पटु होंगे और आपको लक्ष्य की प्राप्ति होगी।

पारिवारिक जीवन :

गुरु के सप्तम अर्थात् जीवनसाथी के भाव में स्थित होने के कारण आपके जीवन साथी आपके सहयोगी होंगे और व्यवसाय में आपकी सहायता करेंगे। आपके जीवन साथी का व्यक्तित्व आकर्षक होगा। आपके बच्चे आज्ञाकारी होंगे और आपका पारिवारिक जीवन उन्नतिशील होगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

धार्मिक मानसिकता के कारण आप अपना अधिकतर समय शास्त्रों तथा धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में लगाएंगे।



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

महादशा :- शनि
(15/11/2027 - 15/11/2046)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि की महादशा 15/11/2027 को आरम्भ और 15/11/2046 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 19 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में शनि 12वें भाव में स्थित है। यह एक खतरनाक ग्रह है। यह लक्ष्य की प्राप्ति में विलम्ब और बाधा उत्पन्न करता है। जतक के धैर्य की परीक्षा लेना इसकी प्रवृत्ति होती है और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यह जातक को कठिन परिश्रम करने को प्रेरित करता है। आपकी जन्मकुण्डली में 12वें भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि-द्वितीय, षष्ठम तथा नवम भाव पर है और यह उनके कार्यों को प्रभावित करता है। 12वां भाव, जिसमें यह ग्रह स्थित है, क्षति और बाधा, फिजूलखर्च, उदासी और चाकरी, दान, पुण्य, परिवार से अलगाव, कंजूसी और दुर्भाग्य, कार वास, अस्पताल में भर्ती, छल-कपट, अपकीर्ति, अपयश, बायीं आँख, शयन-सुख, ऋण तथा विदेश प्रवास का द्योतक है।



स्वास्थ्य :

12वें भाव दुर्भाग्य के भाव में स्थित शनि के कारण आपको कुछ स्वास्थ्य समस्या हो सकती है।

धन-सम्पत्ति :

12वें भाव में स्थित महादशा के स्वामी शनि के कारण आपको इस दशा के दौरान बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है, किन्तु, चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि के अवसर भी मिलेंगे। आप विदेश में अपना भाग्य आजमा सकते हैं, किन्तु आपको अनेक बाधाओं के कारण सफलता नहीं मिलेगी।

व्यवसाय :

आप भ्रमणशील हैं और आपके जीवन में अनेक परिवर्तन आएंगे इसलिए आपके व्यवसाय में अनेक उतार-चढ़ाव आएंगे और आपकी हानि होगी। दिमागी स्तर पर आप सतर्क नहीं रहेंगे और सुस्त दिमाग होने के कारण आपके विभिन्न कार्यों में धन की हानि होगी। आप धार्मिक कार्यों पर अत्यधिक धन खर्च करेंगे। आप कृषि कार्य भी कर सकते हैं।

पारिवारिक कार्य :

आपके पारिवारिक जीवन में भी समस्याएं उत्पन्न होंगी। असन्तोष तथा बिखराव के कारण आपका पारिवारिक जीवन असन्तुलित हो सकता है जिससे आपका जीवन कष्टमय हो जाएगा। आपकी पत्नी आपकी सहयोगी हो सकती हैं, पर ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जा सकती है कि आपको परिवार से दूर जाना पड़े जिसके फलस्वरूप आप परिवार से अलग भी हो सकते हैं।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

शिक्षा की दृष्टि से यह दशा बहुत अनुकूल नहीं है।

अंतर्दशा :- शनि - शनि
(15/11/2027 - 18/11/2030)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 15/11/2027 को प्रारंभ होकर 15/11/2046 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 3 वर्ष 3 मास की होगी जो आपके लिए 15/11/2027 को प्रारंभ होकर 18/11/2030 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। शनि शक्तिशाली ग्रह है। इसे यद्यपि अशुभ समझा जाता है, परंतु यह जातक के धैर्य की परीक्षा लेता है। यह शुभ फल में देरी तो करता है, परंतु फल मिलता अवश्य है। द्वादश भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 2, 6, 9 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको संयम और धैर्य से काम करना होगा क्योंकि शनि आपकी परीक्षा ले सकता है। व्यापार में धनहानि संभव है। आलस्य की भावना रह सकती है; शत्रु बढ़ सकते हैं। गुपचुप पापकर्म में लिप्त हो सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए दाहिने हाथ की मध्यमा अंगुली में, सोने की अंगूठी में नीलम, शनिवार के दिन, रात्रिशयन से पूर्व, अंगूठी को कच्चे दूध और गंगाजल में धोकर, प्रार्थना के उपरांत धारण करें।

अंतर्दशा :- शनि - बुध
(18/11/2030 - 28/07/2033)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 15/11/2027 को प्रारंभ होकर 15/11/2046 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 2 वर्ष 8 मास 9 दिन की होगी जो आपके लिए 18/11/2030 को प्रारंभ होकर 28/07/2033 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के दशम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी संगीत में रुचि होगी। विदेश जा सकते हैं। कार्यक्षेत्र में सम्मान होगा। शिक्षाविद बन सकते हैं। व्यवहार नीतिपूर्ण रहेगा। उच्चपद पर आसीन होंगे।

बुध बुद्धि का कारक है और आपके लिए शुभ है।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के वैदिक मंत्र के 9000 जाप करें।